जापान

भारती

अंक २ विक्रम संवत् २०५२ अप्रैल १९९५

भारतीय नववर्ष संवत् २०५२ गुड़ी पाड़वा चैती चंद की शुभकामनाएं

इस अंक में

*

हमारा पन्ना
आपका पन्ना
प्रतिक्रिया
श्रद्धांजलि
पर्व
सम्मान
काव्यधारा
क्राई
बाङ्ला
बचपन
विविध

तनोतु मंगल कामं, नववर्ष समागते ।
सहस्त्र शीर्षः पुरुषः, सहस्त्राक्षः सहस्त्रपात् ।।

❄❄

जापान
भारती

संयोजक

सौरभ सिंघल
रंजन कुमार

सलाह-सहयोग

अखिल मित्तल
रंजन गुप्त (রঞ্জন গুপ্ত, বাংলা)
सुशील जैन

पता

२०८, मैंशन न्यू ताकानावा
२-१०-१५ ताकानावा
मिनातो कू
तोक्यो १०८

फोन/फैक्स/ई-मेल

सौरभ : ०३-३४६२-०८५३
singals@ml.com
रंजन : ०३-३४७३-६०४३
ranjan@twics.com

जापान भारती का दूसरा अंक आपके हाथों में है । प्रवेशांक में जो कुछ कमियां रह गई थीं उन्हें सुधारने का प्रयास तो किया है। हम अपने इस प्रयास में कहाँ तक सफल हो रहे हैं इसके लिए आपकी लिखित प्रतिक्रिया आवश्वयक है ।

हिन्दी के साथ-साथ सभी भारतीय भाषाओं के लेखकों और पाठकों को हमसे जोड़ने में सहायता कीजिए ।

प्रवेशांक पर मिली कुछ प्रतिक्रयाएँ प्रकाशित कर रहे हैं । आप सब से विनम्र अनुरोध है कि अपनी रचनाएँ और लिखित प्रतिक्रयाएँ भेज कर जापान भारती का साथ दीजिए । अन्यथा इसे आगे कैसे बढ़ाया जा सकेगा ? हम ये भी जानना चाहते हैं कि पत्रिका आप तक पहुँच रही है या नहीं ? आशा है आप इतना तो अवश्य बताएंगें ।

भारतीय नववर्ष

विक्रम संवत् २०५२

मंगलमय हो!!

-१-

जापान भारती का प्रवेशांक सराहनीय है । हिंदी के साथ साथ तमिल और बंगला रचनाओं के प्रकाशन ने इसे सचमुच भारती बना दिया है । सभी भाषाओं में लिखी गई रचनाओं के प्रकाशन के निमंत्रण से उदार दृष्टि का परिचय प्राप्त होता है । मिवाको कोएजुका का संस्मरण ' हिंदीमय' बहुत रोचक और ज्ञानवर्द्धक है । उन्हें मेरी बधाई ।

प्रो. ओम्प्रकाश सिंहल, चीन

-२-

सबसे पहले जापान भारती के प्रकाशन पर आपको मेरी बधाई । इसका प्रकाशन और सामग्री काफी अच्छे स्तर के हैं । अगर इस प्रयास मे आपको मेरी किसी भी सहायता की जरूरत हो, तो मै सदैव उपलब्ध हूँ । आशा है कि जापान भारती से भारतीय समुदाय को एक मंच मिलेगा।

सस्नेह,

ए.पी.एस. मणी, जापान

-३-

भारती के प्रवेशांक को प्राप्त कर हार्दिक प्रसन्नता हुई, आप महानुभावों ने निश्चय ही एक नेक काम का शुभारम्भ किया है, इसके लिए मेरी ओर से बधाई स्वीकारें । आशा ही नहीं, पूर्ण विश्वास है कि आप लोगों का यह उत्साहजनक प्रयास अवश्य ही सफल रहेगा । जापान में निवासित भारतीय समुदाय का एक सदस्य होने के नाते मैं व्यक्तिगत रूप से इस पत्रिका के लिए कुछ कर सका तो सौभाग्यशाली रहूँगा । शुभकामनाओं के साथ उम्मीद करता हूँ कि भारतीय समुदाय को अपनी जड़ों से जोड़े रखने में यह पत्रिका कारगर रहेगी । भारतीय भाषाओं के जापानी सेवियों के बीच हमारी सांस्कृतिक एकता का प्रदर्शन करेगी ।

मेरा संबंध राजस्थान के जयपुर शहर से है, राजस्थानी में आपको लेख उपलब्ध कराने का प्रयास करूंगा । इन्हीं शुभकामनाओं के साथ एवं अगले अंक की प्रतीक्षा में ।

नरेश मुकुर सिंह, योकोहामा, जापान